1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।।
यजुर्वेद 5/25
हे प्रभो! हमसे द्वेष के भावों और कृपणता को दूर करो।
O God ! Drive away hatred and thankless-ness from our lives.

वर्ष 40, अंक 31 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 मई, 2017 से रविवार 4 जून, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत 36वां वैचारिक क्रान्ति शिविर का समापन समारोह मावलंकर हॉल में सम्पन्न

जहाँ अलगाववाद के नारे लगते थे आज वहां जय हिन्द और वंदेमातरम् गूंज रहा है – महाशय धर्मपाल

देश में लोग मेहमान के दो दिन ज्यादा रुकने से थक जाते हैं ऐसे में आर्य समाज सैंकड़ो बच्चों का निःस्वार्थ पालन-पोषण कर रहा है
– श्याम जाजू, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा

आर्य समाज बिना आडम्बर और निःस्वार्थ भाव से आज देश को नई दिशा देने का कार्य कर रहा है
– अनुसुइया, यू.इ.के.एन.सी.एस.टी., उपाध्यक्ष)

आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज की ज्योति आज विशुद्ध ज्ञान का प्रकाश फैला रही रही है – कैप्टन रूद्रसेन, हरिभूमि

जरुरतमन्द बच्चों की मदद को कपड़े, जूते, किताबें आदि प्रदान करने लिए 'सहयोग' नामक योजना शुभारम्भ

वनवासियों के हितों की रक्षा के लिए आर्य समाज का लक्ष्य, संकल्प और विषय सम्मान का पात्र है
-सुरेश कुलकर्णी संगठन मंत्री, वनवासी कल्याण

सहयोग योजना की विस्तृत रूपरेखा अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी।

'अगर देश के काम न आये तो जीवन है बेकार। हो जाओ तैयार साथियों, हो जाओ तैयार।' पूर्वोत्तर भारत से आये छात्रों द्वारा गाये इस गीत के साथ अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ की ओर से आयोजित 36वें वनवासी वैचारिक क्रांति शिविर का समापन सम्पन्न हुआ। बच्चों द्वारा भजन प्रस्तुति के साथ समारोह का भव्य आरम्भ वैदिक राष्ट्रगान के साथ महाशय धर्मपाल जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। समारोह में आये सभी अतिथियों का पुष्प माला पहनाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन आचार्य दयासागर ने किया, मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू उपस्थित रहे। इस अवसर पर उन्होंने दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा वनवासी प्रतिभागियों को भारतीय संस्कृति की शिक्षा देने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि सबका साथ सबका विकास आर्य समाज के मंचो और कार्यक्रमों में हमेशा देखने को मिलता है। सिर्फ भाषण देने से उन्नति नहीं होती, देश

– शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में घर-घर यज्ञ – हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत

यज्ञ विधि – प्रक्रिया – एकरूपता- विशेषताओं तथा यज्ञ विज्ञान का सामान्य ज्ञान प्रदान करने हेतु

पांच दिवसीय पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में संचालित घर-घर यज्ञ – हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत समान यज्ञ विधि, प्रक्रिया, विशेषताओं एवं यज्ञ विज्ञान का सामान्य ज्ञान प्रदान करने के लिए 23 से 27 मई 2017 पांच दिवसीय पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज पंजाबी बाग (पश्चिम) एवं एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग पश्चिम में सम्पन्न हुआ।

शिविर के मध्य एक दिन पधारे महाशय धर्मपाल जी ने अपने मन के उद्गार प्रकट करते हुए महाशय धर्मपाल जी ने कहा – ''यज्ञ करने वाले स्वर्ग को पाते हैं (इजानाः स्वर्ग यान्ति लोकम्,

– शेष पृष्ठ 4 एवं 7 पर

आर्यसमाज द्वारा घोर निन्दा

भारत सरकार, पर्यावरण मंत्रालय के मवेशी के कटान पर अधिसूचना जारी करने के विरोध में जिस तरह केरल में यूथ कांग्रेस कार्यकर्ता द्वारा सरेआम गौहत्या के इस घृणित कार्य को अंजाम दिया गया आर्य समाज इसकी कड़ी निन्दा करता है ऐसे लोगों और कृत्यों की हमारी संस्कृति में कोई जगह नहीं है।

भारतीय संस्कृति किसी भी जीवित प्राणी को नुकसान पहुंचाने के पक्ष में नहीं है, गाय बहुत पवित्र है जिसे हम लोग मानते हैं और आदर करते हैं। यह सभ्य समाज से बिल्कुल अपरिचित और हमारी संस्कृति और संस्थापक सिद्धांतों के खिलाफ है, गौ हत्या के इस घृणित कार्य से सम्पूर्ण मानव जाति शर्मसार हुई है, ऐसा घृणित कार्य कभी क्षमा नहीं किया जा सकता। हिन्दू समाज की भावनाओं के साथ किए गए खिलवाड़ की कड़े शादों में निन्दा करते हैं, सार्वदेशिक सभा प्रधान सुरेशचंद्र आर्य, दिल्ली सभा प्रधान धर्मपाल आर्य। विस्तृत रिपोर्ट आर्य सन्देश के अगले अंक में पढ़ें। – **सम्पादक**

निवेदक

वेद-स्वाध्याय

मन में सारा ज्ञान-विज्ञान

यस्मिन्नृचः साम यजूळषि यस्मिन प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु।। -यजुः. 34/5
ऋषिः शिवसङ्कल्पः।। देवता - मनः।। छन्दः विराट्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - **यस्मिन्** = जिस मनस्तत्त्व में **ऋचः साम** = ऋग्ज्ञान और सामज्ञान तथा **यस्मिन् यजूंषि** = जिसमें सब यजुर्ज्ञान भी **प्रतिष्ठिताः** = इस प्रकार स्थापित है **इव** = जैसे कि **रथनाभौ अराः** = रथनाभि में अरे लगे रहते हैं, जड़े रहते हैं और **यस्मिन्**= जिस मनस्तत्त्व में **प्रजानां सर्व चित्तम्**= प्रजामात्र का सम्पूर्ण चित्त, सब संस्कारों से चित्रित और सर्ववासना-जाल से युक्त चित्त **ओतम्**= ओत-प्रोत हुआ-हुआ, पिरोया हुआ है **तत् मे मनः** = वह मेरे अन्दर स्थित मन **शिवसङ्कल्पं अस्तु**= सर्वथा शुभ ही सङ्कल्प करने वाला हो जाए।

विनय - हे प्रभो! मेरे चित्त का मैल अभी तक नहीं निकला। स्वार्थकामना, राग-द्वेष, मोह आदि मलिनता इससे सूक्ष्मता से ऐसी चिमटी हुई हैं कि इस सूक्ष्म मैल के कारण मेरे बिना जाने भी इसमें अशुभ राग-द्वेषात्मक सङ्कल्प तो न उठें, 'उदार' रूप में न आएँ। मुझे तो इस मन से परम पुरुषार्थ साधना है, सत्यज्ञान को प्राप्त कर लेना है, पर यह मन अभी इतना भी शुद्ध और बलवान् नहीं हुआ है कि सदा शिवसङ्कल्प बना रहे। मन में तो सब दैवज्ञान भी विद्यमान है। ऋक्, यजु, साम, तीनों प्रकार का वेदज्ञान मन के ही आश्रित है। मैं देख रहा हूं कि जैसे रथनाभि में अरे लगे रहते हैं वैसे सब वेद मन में रखे हुए हैं। हे परमेश्वर! यह प्रलय में भी नष्ट न होने वाला तुम्हारा अनन्त, नित्य, वेदज्ञान तुम्हारे सर्वव्यापक, परम शुद्ध मन में ही तो - 'प्रकृष्ट चित्तसत्त्व' में ही तो-रहता है और वहीं से यह वेदज्ञान ऋषियों ने अपने शुद्ध मनों में पाया है और वे मन्त्रद्रष्टा ऋषि बने हैं। सचमुच वेदज्ञान पुस्तकों में नहीं है, यह मन में है। मैं जानता हूं कि सम्पूर्ण वेदराशि, तीनों प्रकार का वेदज्ञान, मेरे भी मन में रखा हुआ है। मेरे भी मन के उच्च, पवित्र होने पर वे तीन अवस्थाएँ आ सकती हैं जिनमें कि ऋग्ज्ञान, यजुर्ज्ञान और सामज्ञान स्वभावतः मुझमें प्रकाशित हो सकेंगे। सभी प्रजाओं के, सभी मनुष्यों के मनस्तत्त्व में जहां उनका सब प्रकार का चित्त, उनके संस्कारों का महाकोष, उनका अनन्त वासनाजाल, सब योनियों की सब प्रकार की असंख्यात वासनाएँ मौजूद हैं, वहीं मन में सब सत्यज्ञान भी मौजूद है, परन्तु यह सब जानते हुए भी मैं लाचार हूँ। प्रत्युत, मैं इसके इस अनन्त भण्डार को जानता हूँ, इसीलिए छटपटा रहा हूँ। मुझे तो अपने मन में वेदाज्ञान को प्रकाशित करना है, परन्तु मन अभी कुसंस्कारों से भरा पड़ा है। मेरे मन को तो सत्य-सङ्कल्प बनना है, परन्तु यह अभी शिव-संङ्कल्प भी नहीं बना है। हे हृदयवासी! कृपा करके मेरे मन को ऐसा दृढ़ कर दो कि मुझमे चाहे कितने सङ्कल्प उठें और जब जो सङ्कल्प चाहें वही उठें, परन्तु वे सब सङ्कल्प शुभ-ही-शुभ हों; उनमें कोई अशिव न हों। मुझमें अकल्याणकारी सङ्कल्प उठने तो अब बन्द ही हो जाएँ। मन की इतनी शुद्धि, इतनी प्रबलता तो प्रदान कर ही दो।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

तिनका -तिनका उठाना पड़ता है

लगभग 10 साल का चन्द्रदेव आर्य जो उत्तर प्रदेश से आया है आज बेहद खुश था उसकी खुशी सिर्फ इस बात में थी कि उसने वैचारिक क्रांति शिविर में 21 मई को यज्ञोपवीत संस्कार पर नया यज्ञोपवीत धारण किया था। शायद उसका मन उन बच्चों की खुशी से कई गुना खुश था जो हजारों रुपये के खिलौने लेकर भी नहीं मुस्कुरा पाते। वह बड़े गर्व के साथ यज्ञोपवीत की ओर इशारा कर बता रहा था कि यह मैंने कल ही धारण किया है। नागालैण्ड की राजधानी दीमापुर से करीब 80 किलोमीटर दूर एक छोटे से गाँव से आया केविलोन बेझिझक कहता है कि आर्य समाज के कारण वह आज ईसाईयत के जहर से बच गया। अपने सनातन धर्म अपनी संस्कृति पर गर्व करता हुआ बताता है कि हम खुश हैं। हमें नहीं पता हम किन-किन मार्गों से गुजरकर यहाँ पहुंचे, लेकिन यहाँ आकर जो सीखा उसे जीवन में उतारकर अपने देश, अपने धर्म के लिए कार्य करेंगे। अब आप खुद अंदाजा लगा सकते हैं कि आर्य समाज किन-किन कठिन रास्तों से होकर इन बच्चों तक पहुंचा होगा!

यह खबर देश, समाज और वैदिक धर्म के लिए कुछ कर गुजरने को प्रेरित ही नहीं करेगी बल्कि राष्ट्र और धर्म के प्रति उऋण होने का मौका भी प्रदान करेगी। आपने देश तोड़ने वाली बहुत विचारधारा इस देश में अभिवयक्ति की आजादी के नाम पर मुहं खोले खड़ी देखी होगी। उस समय गुस्सा भी आता होगा, मन यह भी सोचता होगा कि क्या इस देश में कोई ऐसी विचारधारा भी है जो बिना किसी राजनैतिक एजेंडे के सारे देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती हो? यदि हाँ तो आर्य समाज रानी बाग दिल्ली के दयानन्द सेवाश्रम संघ के सानिध्य में वनवासी बच्चों को शिक्षा के साथ धार्मिक व राष्ट्रीय संस्कारों से जोड़ा जा रहा है।

यहाँ त्रिपुरा से आये एक बच्चे की उम्र करीब 9 साल है सफेद कुरता पायजामा पहने, गले में यज्ञोपवीत धारण किये वह खेल रहा था। हमारे लिए पूर्वोत्तर भारत के इस मासूम से बचपन को करीब से देखने जानने का यह एक बेहतर मौका था। अचानक उसकी नजर कुर्सी पर जमी हल्की सी धूल पर गयी वह दौड़कर एक कपड़ा लेकर आया और कुर्सी को साफ करने लगा। शायद यह आर्य समाज के दिए संस्कारों का प्रभाव था। जब हमने उससे पूछा कि यहाँ आकर कैसा लगा? उसने बेहद उत्सुकता के साथ हाथ जोड़कर नमस्ते कर बताया बहुत अच्छा। उसका हिन्दी भाषा में जवाब सुनकर मन गदगद हो गया कि देश की स्वतन्त्रता के 70 सालों बाद जिन पूर्वोत्तर प्रान्तों को सरकारें सीधा रेल या सड़क मार्ग से नहीं जोड़ पाई वहां आर्य समाज दयानन्द सेवाश्रम संघ देश के मासूम बचपन को इन भीषण परिस्थितियों के बाद भी हिन्दी भाषा व वैदिक संस्कारों से जोड़ने का कार्य कर रहा है।

बबलू डामर मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्र झाबुबा से आया है। महाशय धर्मपाल आर्य विद्या निकेतन बमानिया में पढ़ता है और थोड़ा शर्मीले स्वभाव का है। ज्यादा बात नहीं कर पा रहा था, लेकिन उसकी खुशी उसकी नन्हीं मासूम आँखों में स्पष्ट दिख रही थी। जेम्स आसाम से आया है। महाशय धर्मपाल आर्य विद्या निकेतन धनश्री स्कूल का छात्र है वह बताता है कि वह उन इलाकों से आया है जहाँ स्कूल कॉलेजों से ज्यादा चर्च मिलेंगे हल्का गेरुए रंग का कुर्ता सफेद पायजामा पहने जेम्स की नजरे मानों आर्य समाज का आभार प्रकट कर रही हों। जेम्स नाम सुनकर आप एक पल को चौंक गये होंगे लेकिन बाद में उसने बताया कि वहां उन क्षेत्रों में सनातन नामावली भी करीब-करीब मिट चुकी है। इससे पहले हम और बच्चों से मिलते यहाँ एक सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू हो चुका था। बच्चे कतारबद्ध होकर अपना-अपना स्थान ग्रहण करने लगे थे। ऐसे एक दो नहीं इस शिविर में करीब 200 से ज्यादा बच्चे जो ओड़िशा, मध्यप्रदेक्ष, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, आसाम, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड नागालैंड, झारखण्ड आदि प्रदेशों से आये हैं। ये बच्चे कहते हैं हमने कभी सोचा भी नहीं था कि हम लोग इतनी अच्छी जगह शिक्षा प्राप्त करेंगे।

अधिकांश बच्चे उन प्रान्तों से है जहाँ इसाई मिशनरीज खुलेआम मतमतांतर का कार्य रही है। जिसे बहुत पहले रूस के जोसेफ स्टालिन ने वेटिकन द्वारा चर्च की ''अदृश्य सेना'' माना था। जो लोगों को उनकी जड़ों से काटकर पाश्चात्य संस्कृतियों का नामहीन और व्यक्तित्वहीन नकलची भर बनाते है तथा इसके बदले उनकी पुरानी धार्मिक मान्यताओं को न केवल समाप्त करने बल्कि उनसे और अपने राष्ट्र से घृणा करना सिखाते हैं। लेकिन इसके विपरीत जब आप इन बच्चों के करीब जाएंगे तो सांस्कृतिक आधार पर भारत के सुदूर प्रांतों से आये इन बच्चों के बीच समरसता और आत्मीयता मिलेगी। इनकी आँखों में आपको स्नेह के साथ आभार दिखाई देगा। आप कुछ देर चुपचाप किसी स्थान पर बैठकर देखना फिर आपको स्वयं अहसास होगा कि धर्म संस्कृति के बीच उगने वाले ये छोटे-छोटे पोधे कल जब विशाल वृक्ष बनेंगे तो इसका मीठा फल राष्ट्र को सांस्कृतिक रूप से जरुर उज्जवल बनाने के काम आएगा।

कहते हैं समाज को विद्या और विज्ञान जानने वाला वर्ग ही लेकर आगे बढ़ता है। पहले भी ऐसा ही था और आगे भी ऐसा ही होगा। यही सोचकर आर्य समाज विपरीत परिस्थितियों, में जन और धन के अभाव में भी निरंतर आज यह कार्य कर रहा है। ताकि पूर्व से पश्चिम तक उत्तर से दक्षिण तक वैदिक सभ्यता का प्रचार कर अपनी संस्कृति को वहां स्थापित करे सके जहाँ आर्य लोग हजारों वर्ष पहले कर चुके हैं। देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों के बच्चों को जोड़कर राष्ट्रीय मिलन का यह सबसे उत्तम प्रयास है जिसके लिए तन-मन-धन के सहयोग की जरूरत होगी क्योंकि यह भी सब भलीभांति जानते हैं कि कोई एक अकेला इन्सान यह सब नहीं कर सकता। किसी कवि ने कहा है-

मंजिल यूँ ही नहीं मिलती राही को जुनून सा दिल में जगाना पड़ता है,
पूछा चिड़िया से कि घोसला कैसे बनता है वह बोली
''तिनका तिनका उठाना पड़ता है।''

- सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

मर जाऊंगी, लेकिन अपना धर्म नहीं छोड़ूंगी

.....अक्सर हर एक छोटी बड़ी घटना के पीछे कोई न कोई पर्दे के पीछे जरुर खड़ा होता है। जिस तरह तारा शाहदेव के मामले में झारखंड के दो मंत्रियों का नाम आया था, उसी तरह पाकिस्तान की अंजू के मामले में दीनी जमातों और उलेमाओं की एक राय थी कि अंजू के मामले में पुलिस की कार्यवाही इस्लाम के खिलाफ है तो कोई मुसलमान ये कैसे बर्दाश्त कर सकता है। ऐसा नहीं है पाकिस्तान की पुलिस इतनी सक्रिय है कि इस तरह के मामलों में फौरी एक्शन लेती हो! बस जो मामला अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उठ जाता है वहां उसे खुद को सेकुलर और प्रशासनिक पाकिस्तान दिखाने का ढोंग करना पड़ता है।.....

नेशनल शूटर तारा शाहदेव की कहानी ज्यादा पुरानी नहीं है ये साल 2014 में सबको भावुक कर देने वाला वाक्या बना था। उसके शरीर पर प्रताड़ना के घाव, सुबकते, सिसकते होटों से उसके बयान, हर किसी की पलकें भिगो गये थे। अब तीन साल बाद जो सच सामने निकलकर आया वह और भी हैरान कर देने वाला है। लव जिहाद में फंसी नेशनल लेवल की शूटर तारा शाहदेव के मामले में सीबीआई ने कोर्ट में इस केस की चार्जशीट दाखिल की है। सीबीआई की जांच में जो बातें सामने आई हैं वह इस बात का सबूत हैं कि लड़कियों को धोखे में डालकर उनके धर्मान्तरण का बाकायदा अभियान चल रहा है। सीबीआई ने तारा शाहदेव से शादी करने वाले रकीबुल उर्फ रंजीत कुमार कोहली और उसकी मां कौशर के खिलाफ चार्जशीट जमा की है। इसके मुताबिक रकीबुल और उसकी मां तारा से जबरन इस्लाम धर्म कबूल करवाने पर अड़े थे। तारा की सास ने उसे धमकी देते हुए कहा था कि 'इस्लाम कबूल कर लो, अगर नहीं किया तो तुम्हारा बिस्तर यही रहेगा लेकिन आदमी बदलता रहेगा।'

पूरा मामला जानने के लिए हमें थोड़ा पीछे जाना होगा दरअसल रांची की 23 साल की नेशनल शूटर तारा शाहदेव की रंजीत कोहली उर्फ रकीबुल से 7 जुलाई 2014 को हिन्दू रीति-रिवाज से शादी हुई थी। तारा उसे रंजीत कोहली के नाम से जानती थी और इसी नाम से शादी के कार्ड वगैरह भी छपे थे। लेकिन जब शादी हो गई तो तारा को पता चला कि जिसके साथ वो ब्याहकर आई है वह कोई हिन्दू नहीं, बल्कि एक मुसलमान के घर गई है। उसका पति रंजीत नहीं, बल्कि रकीबुल हसन है। पहली ही रात में रकीबुल और उसकी मां ने तारा से कह दिया कि अब तुम्हें अपना धर्मांतरण करके मुसलमान बनना होगा। जब वह नहीं मानी तो उस पर अमानवीय जुल्म किए गए। जबरन उसका धर्म परिवर्तन भी करा दिया गया।

इस केस की अगली सुनवाई 1 जून को होगी। सीबीआई ने चार्जशीट के साथ वे तमाम सबूत और गवाहों के बयानों को भी पेश किया है, जिससे यह साबित होता है कि तारा शाहदेव को सोची-समझी साजिश के तहत फंसाया गया और उसे झांसे में डालकर शादी की गई। इस सारे खेल का मकसद एक हिन्दू लड़की को मुसलमान बनाना था। सीबीआई ने चार्जशीट में जिक्र किया है कि कैसे 9 जुलाई 2014 के दिन 25 मौलवियों को बुलाकर तारा पर दबाव बनाया गया और उसे धर्मांतरण के लिए मजबूर किया गया। जब वह नहीं तैयार हुई तो उसे बुरी तरह पीटा और कुत्ते से कटवाया गया। यह खबर शायद उन इस्लामविदों को सोचने पर मजबूर कर दे जो न्यूज रूम में बैठकर इस्लाम में नारी के सम्मान की बड़ी-बड़ी डींगे हांकते दिखाई देते हैं।

हर वर्ष भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि देशों में इस मजहबी मानसिकता का शिकार हुई न जाने कितनी तारा शाहदेव किसी खौफ के कोने में दुबकी सिसकती मिल जाएंगी, तारा शाहदेव की कहानी से मिलती एक घटना अभी पिछले दिनों पाकिस्तान में घटी थी। जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बनी थी। यहाँ तो प्रेम और प्रलोभन जैसे हतकंडे अपनाये जाते है लेकिन वहां तो प्रेम को भी फालतू का स्वांग समझा जाता है। बस जिसका मन करता है वह दिन दहाड़े अन्य समुदायों की खासकर हिन्दू लड़कियों को उठा लिया जाता है।

पाकिस्तान के मीरपुर खास से डेढ़ घंटे की दूरी पर स्थित एक गांव निवासी अंजू अपने मुसलमान अपहरणकर्ताओं की हिंसा सहने के बाद हाल ही में घर लौटी है। हिन्दू समुदाय के अधिकारों के लिए काम करने वाली सामाजिक कार्यकर्ता राधा बहेल बताती है कि मीरपुर खास जिले में पिछले तीन महीने में तीन हिन्दू लड़कियों के जबरन धर्म परिवर्तन करने की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। अंजू का पांच मुसलमान पुरुषों ने अपहरण कर लिया था। उसे कुछ महीने कैद में रखा गया ताकि उसका धर्म परिवर्तन किया जा सके। अदालत के दखल के बाद ही अंजू वापस अपने गांव लौट सकी है। जिस 16 साल की उम्र में अंजू को शोख और चंचल होना चाहिए था, लेकिन उनका चेहरा फीका है। अपनी आपबीती सुनाते हुए भी उनकी आँखों में नमी न थी जैसे रोने के लिए उनके पास आंसू भी न बचे हों।

वह बताती है 'मैं अपनी मां के साथ खेतों में घास लेने गई थी। पांच लोग बंदूक लेकर आए और बोले कि हमारे साथ चलो नहीं तो गोली मार देंगे। मैं डर के मारे चली गई। वे मुझे बहुत दूर लेकर गए और एक घर में जाकर रस्सियों से बांध दिया।' अंजू का कहना है तीन चार महीनों तक उसे बहुत पीटा गया और ज्यादती की गई, वह बोलते थे कि इस्लाम अपना लो अन्यथा नहीं छोड़ेंगे, लेकिन मैंने कहा कि मैं मर जाऊँगी, लेकिन अपना धर्म नहीं छोड़ूंगी।

अक्सर हर एक छोटी बड़ी घटना के पीछे कोई न कोई पर्दे के पीछे जरुर खड़ा होता है। जिस तरह तारा शाहदेव के मामले में झारखंड के दो मंत्रियों का नाम आया था, उसी तरह पाकिस्तान की अंजू के मामले में दीनी जमातों और उलेमाओं की एक राय थी कि अंजू के मामले में पुलिस की कार्यवाही इस्लाम के खिलाफ है तो कोई मुसलमान ये कैसे बर्दाश्त कर सकता है। ऐसा नहीं है पाकिस्तान की पुलिस इतनी सक्रिय है कि इस तरह के मामलों में फौरी एक्शन लेती हो! बस जो मामला अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उठ जाता है वहां उसे खुद को सेकुलर और प्रशासनिक पाकिस्तान दिखाने का ढोंग करना पड़ता है अंजू के मामले में भी छः महीने बाद कार्यवाही की गई थी।

इस सबसे यही प्रतीत होता है कि किस तरह सत्ता और मजहब की मिली भगत से ही ऐसे घिनौने कृत्यों को अंजाम दिया जाता रहा है। लेकिन सवाल यह है कि इस्लाम के नाम पर अंजू और तारा जैसी मासूम लड़कियों के साथ होने वाली ज्यादती को कैसे रोका जाए? हालांकिअंजू हो या तारा ऐसी मजबूत लड़कियों को हृदय से नमन जिन्होंने इतनी प्रताड़ना, घाव सहकर और विकट परिस्थितियों में रहकर भी अपना धर्म नहीं छोड़ा।- ***राजीव चौधरी***

बोध कथा

आत्मा की ज्योति

कश्मीर में कुकरना एक सुन्दर स्थान है। नाग कहते हैं झरने को और कुकर कहते हैं कुत्ते को। कुत्ते की भाँति भौंकता हुआ, ध्वनि करता हुआ पानी कितने ही स्थानों से वहाँ बहता है। मैं वहाँ ठहरा हुआ था। एक दिन झरने से ऊपर पहाड़ पर चला गया। काफी आगे जाकर देखा कि एक सुन्दर मकान बना है। उसके दालान में एक सुन्दर कश्मीरी युवक बैठा है। मैंने उसके पास जाकर पूछा-''क्यों भाई! यह सामने वाली पगडंडी कहाँ को जाती है?''

उसने मेरी ओर देखा, वहीं चुपचाप बैठा रहा। मैंने समझा, शायद उसने मेरी आवाज़ को सुना नहीं और मेरी बात को समझा नहीं। अत: तनिक ऊँची आवाज़ में फिर पूछा-''यह मार्ग कहाँ जाता है?''

वह अब भी नहीं बोला। हाँ, मकान के अन्दर से एक बूढ़े व्यक्ति ने आकर कहा-''क्या बात है?''

मैंने कहा-''मैं इस युवक से पगडंडी के बारे में पूछ रहा था, परन्तु यह मेरी बात का उत्तर ही नहीं देता।''

अन्दर से आने वाले वृद्ध ने कहा-''कैसे देगा उत्तर? यह तो बहरा है, सुनता ही नहीं। गूंगा है, बोल भी नहीं सकता। अन्धा है, देख भी नहीं सकता।''

मैंने दु:ख के साथ उस युवक की ओर देखा जो अब भी चुपचाप बैठा था। वृद्ध ने कहा-''ठीक समय पर सो जाता है। ठीक समय पर जाग उठता है। पशुओं के साथ सामने वाले मैदान में चला जाता है। शाम को वापस आता है। इतना ही कार्य कर सकता है। आँखें होने पर भी देखता नहीं। कान होने पर भी सुनता नहीं। जिह्वा होने पर भ बोल नहीं सकता।''

उस समय मुझे उपनिषद् की कथा याद आई। महर्षि याज्ञवल्क्य के पास महाराज जनक बैठे थे; बोले-''महर्षि! मेरे मन में एक शंका है । हम जो कुछ देखते हैं, वह किसकी ज्योति से देखते हैं?''

महर्षि ने कहा-''यह क्या बच्चों वाली बात कहते हैं आप? प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि हम जो कुछ देखते हैं, वह सूर्य की ज्योति के कारण देखते हैं।''

जनक बोले-''सूर्य अस्त हो जाता है, तब हम किस प्रकाश से देखते हैं?''

महर्षि बोले-''चन्द्रमा के प्रकाश से।''

जनक ने कहा-''जब चन्द्रमा भी न हो, नक्षत्र भी न हों, अमावस के बादलों से भरी अँधेरी घोर रात हो, तब?''

महर्षि ने कहा-''तब हम शब्दों की ज्योति से देखते हैं। विशाल वन है। चहुँ ओर अँधेरा है। पथिक मार्ग भूल गया है। वह आवाज़ देता है-'मुझे मार्ग दिखाओ!' तब दूसरा व्यक्ति दूर खड़ा हुआ उस शब्द को सुनकर कहता है-'इधर आओ, मैं मार्ग पर खड़ा हूँ।' और वह व्यक्ति शब्द के प्रकाश से मार्ग पर पहुँच जाता है।''

जनक ने पूछा-''महर्षि! और जब शब्द भी न हो, तब हम किस ज्योति से देखते हैं?''

महर्षि बोले-''तब हम आत्मा की ज्योति से देखते हैं। आत्मा की ज्योति से ही सारे कार्य होते हैं।''

''और यह आत्मा क्या है?'' राजा जनक ने पूछा। ऋषि ने उत्तर दिया-

योऽयं विज्ञानमय: प्राणेषु हृदयस्तज्ज्योतिपुरुष:।

''यह जो विशेष ज्ञान से भरपूर, जीवन और ज्योति से भरपूर है, जो हृदय में जीवन है, अन्त:करण में ज्योति है और सारे शरीर में विद्यामन है, यही आत्मा है।''

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यामां (बर्मा) : 6-7-8 अक्तूबर 2017

महासम्मेलन की तैयारियों एवं चर्चा हेतु मांडले पहुंचे सार्वदेशिक सभा के अधिकारी

विगत 2006 से प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने की घोषणा दिल्ली में आयोजित आर्य सम्मेलन में की थी। उस घोषणा के अनुसार 11 वाँ महासम्मेलन बर्मा में आगामी 6, 7, 8 अक्टूबर 2017 को सम्पन्न होने जा रहा है।

इस सन्दर्भ में सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य के साथ अन्य पदाधिकारी विगत वर्ष 2016 में म्यांमार गए थे। उस समय शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की लगभग 15 आर्य समाजों में जाकर सम्पर्क किया था। सम्मेलन की चर्चा भी हुई थी।

विश्व भर से सम्मेलन में भाग लेने के समाचार प्राप्त हो रहें हैं : सम्मेलन को लेकर म्यांमा के आर्यजनों में भारी उत्साह

बर्मा में पहले भी आर्य समाज की गतिविधियाँ विद्यालय, अनाथालय, सत्संग संचालित होते थे। बर्मा में लगभग प्रत्येक बड़े शहर में जैसे रंगून, माण्डले, लाशियो, मिचिना, मोगोग, जियावाड़ी में भव्य भवन बने हुए हैं। रंगून की आर्य समाज की स्थापना 1899 में हुई थी। उसी प्रकार माण्डले आर्य समाज 1895 में बनी जिसमें नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भी आते रहे हैं। माण्डले में ही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस व बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय को गिरफ्तार कर बन्दी बनाया था। आज भी वह किला और जेल जिसकी चारों ओर से 12 किलोमीटर के घेरे में गहरा पानी भरा है वह ऐतिहासिक स्थान है।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय बर्मा की आर्यसमाजों को काफी नुकसान हुआ था। बाद में उसकी पूर्ति करने में काफी श्रम व शक्ति लगी तथा अनेक परिवार बर्मा छोड़कर अमेरिका, कनाड़ा, भारत आदि देशों में बस गए।

इस समय बर्मा में लगभग 35-40 आर्य समाजों के सुन्दर भवन हैं। हजारों व्यक्ति आर्य समाज से जुड़े हैं। भारत का निरन्तर सम्पर्क न होने से तथा बीच में सैनिक शासन होने से प्रचार-प्रसार रुक गया था। किन्तु पुन: विदेशों में बढ़ते प्रचार प्रसार से एक नवस्फूर्ति का संचार हुआ है।

दिल्ली में आयोजित सन् 2012 के आर्य महासम्मेलन में ही बर्मा से आए आर्यजनों ने सम्मेलन की घोषणा की थी।

इसी उद्देश्य से मैं तथा श्री विनय आर्य 13 मई से 18 मई तक बर्मा में रहे। वहाँ अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क किया, वैदिक सैद्धान्तिक चर्चा एवं आर्य समाज के सम्बम्ध में जानकारी दी, बैठकें ली।

चारों दिन अलग-अलग स्थानों पर यज्ञ एवं सत्संग का कार्य चला। म्यामां में होने वाला यह महासम्मेलन 122 सालों में पहली बार होगा।

बर्मा प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री अशोक खेत्रपाल, मन्त्री पवन जी, माण्डले समाज के प्रधान विशेष नरुला, मन्त्री सन्दीप खेत्रपाल, सभा के उपाध्यक्ष प्रदीप गुलाटी, प्रान्त के अनेक कार्यकर्त्ताओं ने सम्मेलन को सफल बनाने की योजना बनाई।

- **यात्रा के चारों दिन अलग-अलग स्थानों पर यज्ञ एवं सत्संग का कार्य चला।**
- **म्यांमा में होने वाला यह आर्य महासम्मेलन 122 सालों में पली बार आयोजित होगा**

सम्मेलन लाशियों में स्थित एक विशाल सनातन मन्दिर 'शंखाई' में करने का निर्णय लिया। परिस्थितियों के अनुसार यह महासम्मेलन मांडले में भी होना सम्भव है। कार्यक्रम स्थल तक अत्यन्त मनोहर प्राकृतिक दृश्य यात्रियों को आकर्षित करता है।

शीघ्र ही इस संबंध में पूर्ण कार्यक्रम व योजना बनाकर प्रकाशित की जाएगी।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ सम्मेलन को लेकर चर्चा करते सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य एवं उपमन्त्री श्री विनय आर्य।

प्रीतिभोज में सभा अधिकारियों के साथ। जिस मैदान में महासम्मेलन आयोजित किया जाना है, उसका निरीक्षण एवं पंण्डाल आदि का माप बताते सभा अधिकारी। आर्यसमाज मांडले में भजन-प्रवचन करते सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी।

प्रथम पृष्ठ का शेष

पांच दिवसीय पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण.....

अथर्ववेद 18, 4, 2) तो हकीकत में हम स्वर्ग में ही हैं हर कोई यज्ञ कर रहा है यही तो स्वर्ग है।''

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि ''यदि इस तरह यज्ञ होंगे तो पूरा वायु मण्डल प्रदूषण रहित हो जाएगा क्योंकि देशी गाय के घी, समिधा व सामग्री का उचित मात्रा में मन्त्रों के साथ यज्ञ करने से पी.एम. 2.5, पी. एम.10, फगंस, मलेरिया, कैंसर आदि के वैक्टीरिया निम्न स्तर पर पहुंच जाते हैं तथा मानव जीवन सुरक्षित हो जाता है। महर्षि दयानन्द का 'घर-घर यज्ञ -हर घर यज्ञ' का सपना इस तरह पूरा हो सकता है जब हर मनुष्य वेद की ऋचाओं द्वारा स्वयं यज्ञ करेंगे।''

इस शिविर में 74 आर्य सदस्यों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। डॉ. ऋषि पाल शास्त्री जी ने वेद मन्त्रों के उच्चारणों के अभ्यास द्वारा शोधन किया तथा इस विधि को विस्तार से समझाया जिसमें श्री सत्यपाल मधुर जी धर्माचार्य, आर्यसमाज

यज्ञ प्रशिक्षण देते आचार्य ऋषिपाल जी साथ में हैं महाशय धर्मपाल जी। एक साथ दीप प्रज्ज्वलन, अग्नयाधान एवं आहुति प्रदान करने के लिए उठते हाथ। - शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

की उन्नति होती है आर्य समाज की तरह पूर्ण निष्ठा एवं लग्न के साथ काम करने से। जहाँ देश में लोग दो दिन ज्यादा मेहमान के रुकने से थक जाते हैं ऐसे में आर्य समाज सैंकड़ो हजारों बच्चों का निस्वार्थ पालन-पोषण कर रहा है।

इस अवसर पर महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर ने बताया कि "शिविर में आसाम, नागालैंड, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिसा, मध्य प्रदेश, राजस्थान व उत्तर प्रदेश इत्यादि राज्यों से करीब 200 बच्चों समेत अन्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उन्होंने बताया कि सन् 1968 से संस्था इन क्षेत्रों में वनवासी समाज के उत्थान का कार्य कर रही है। लगातार हर वर्ष आदिवासी, प्रतिनिधियों को स्वावलंबी बनाने की शिक्षा के साथ ही उन्हें भारतीय संस्कृति की जानकारी दी जाती रही है। आर्य समाज किसी जाति समुदाय से बंधा नहीं है। हम ज्ञान का दीपक लेकर आगे बढ़ रहे हैं ताकि आने वाला भारत शिक्षा के साथ जागरूकता का प्रकाश विश्व के कोने-कोने में पहुंचा सके। उन्होंने बताया कि इस परम्परा की शुरुआत पिछले 35 वर्षों से लगातार जारी है। देश के विभिन्न राज्यों से करीब दो सौ से ज्यादा छात्र-छात्राएं दिल्ली के गुरुकुल में रहकर नि:शुल्क पढ़ रहे हैं जिसमें एक बच्चे का मासिक खर्च लगभग 7 से 8 हजार रुपये होता है। इस अवसर पर संस्था की ओर से गरीब आदिवासी

हम सबको आर्यसमाजों के माध्यम से दयानन्द सेवाश्रम संघ की इन लोकोपकारी गतिविधियों में आवश्यक रूप से सहयोग करना होगा - धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य समाज श्रीरामचंद्र की तरह वनांचलो में सेवा कार्य करने के साथ वनवासी समाज मे संस्कार और गौरव जगाने का कार्य कर रहा है - विनोद बंसल, विश्व हिन्दू परिषद

दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ शुभारम्भ।

महाशय धर्मपाल जी को सम्मान पत्र भेंट।

भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का सम्मान।

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मन्त्री श्री सुदर्शन भगत का सम्मान।

अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान - श्री रमाकान्त शिरोमणि को स्मृति चिह्न भेंट करते श्री जोगेन्द्र खट्टर एवं आचार्य जीववर्धन जी। श्री सुरेन्द्र गुप्ता जी का स्वागत करते श्री योगेश आर्य जी। श्री नीरज आर्य जी को आशीर्वाद देते महाशय धर्मपाल जी। श्री कै. रुद्रसेन को स्मृति चिह्न भेंट करते महाशय जी। श्रीमती अनुसुइया यूईके को स्मृति चिह्न प्रदान करते महाशय जी एवं श्रीमती उषा किरण आर्या साथ में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी।

उद्बोधन देते समारोह वैदिक विद्वान् आचार्य वागीश जी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्याम जाजू जी। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, सह संयोजक आचार्य दयासागर जी एवं व्यवस्थापक श्री सुरेन्द्र चौधरी जी।

शिविर के समापन समारोह के अवसर पर सांस्कृति प्रस्तुति देते आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ता एवं दिल्ली में अध्ययनरत ब्रह्मचारीगण।

- शेष पृष्ठ 7 पर

Veda Prarthana

There is Only One God, Pray to Him Alone for Blessings

- Acharya Gyaneshwarya

एक इत्तमु ष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः।
पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः।।
Ya eka it tamu shtuhi
krashtinam visharshanih.
Patirjajne vrashakratuh.
(RigVeda 6:45:16)

Human beings listen!

Tamu shtuhi it you should pray to or praise Him i.e. God Ya eka Who Aone is, One who is, visharshanih Omniscient and perfectly knows krashti nam activites of all human beings. Patirjajne He is the Master of the Universe and is vrashakratuh Almighty and showers us with beneficial riches.

O human beings! there is only One God in the universe and He permeates everything in it. He is even present inside our souls. Thus, God is Omniscient and also knows perfectly each and every deed of all human beings. God knows everything whether it is at the levels of thoughts (in our minds), words or manifest actions. Thus God is able to be a Perfect karmphaldata, giving us good or bad rewards based on our actions and not in an arbitrary manner. Moreover, God is the closest entity to us in the present, has been so in the past and will be so in the future. God is the Greatest Power in the universe and there is no body greater well-wisher of human beings than Him; He is our Supreme Protector and Friend. Being present inside our soul and mind, God always guides and inspires us to do virtuous things; God is our Foremost Nurturer. All of the wonderful things of the universe whether living or non-living which we utilize to sustain, protect and progress in our lives have been provided by the same Omnipresent but formless God.

God gives life to all our relatives including our monthers, fathers, brothers, sisters, friends, teachers and all other human beings who nurture and protect us. He is the Ultimate Source who inspires and encourages all of us to follow the virtuous path despite any obstacles in the way.

At the beginning of each universe's cycle (srishti) God with His creative power activates prakriti into the manifest universe including various galaxies, stars, our sun, earth, other planets, moon, air, water, sky and other objects. God is the creator of various plants, trees, grains, fruits, vegetables, herbs, animals, birds, insects and other creatures all of which help sustain us in our lives. We cannot exist in th world without various things created by Omnipresent God. He is the Master Architect and Power that maintains order in the universe and showers us with various riches. Therefore, O human beings! we should pray to and worship only God and no other entity. He alone is Omnipotent, Omniscient, Kind, Benevolent and Truly Just who gives us awards exactly as we deserve based on our deeds. God does not discriminate among various human beings based upon sex, race or religion; in His eyes we are all human beings, whether we choose to be noble and virtuous persons or be liars, selfish, greedy and sinners, the choice is ours. In contrast to One True God, we should never pray to any powerful/wealthy rulers or human beings; alleged incarnations of God; and any images made of the formless God. No ruler or human being even if they appear famous or honorable bcause of their power, wealth, knowledge, devotion or piety can ever be Omnipotent, Omniscient, Well-Wisher of everybody, and Truly Just. Their power, nowledge and resources are always limited. Under many circumstances they may either be themselves helpless or due to their selfish interests would reject us leaving us helpless, dejected and in misery. They can never fully shelter or protect us because of their own limitations as well as bheir lack of knowledge of our true needs.

Hence, O human beings! We will achieve true success in our lives if we pray to and worship only God who is always our Closest Companion, knows all our desires and needs, is our True Guide in life, Perfect Well-Wisher, Nurturer and Protector.

For God's attributes, also see mantras # 1, 5, 8, 10, 20, 28, 30, 31) **To be continued**

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 25

शिक्षा सम्बन्धी शब्द

गतांक से आगे....

1. क्लास	रूमः कक्षा
2. बेंच पुस्तक रखने की	दीर्घोत्पीठिका
3. बेंच बैठने की	दीर्घपीठिका,
4. मेज	उत्पीठिका,
5. कुर्सी:	आसन्दः,
6. बैग:	स्यूतः,
7. किताब	पुस्तकम्
8. कलम लेखनी	कलमः,
9. लडकी	बाला या बालिका,
10. लडका	बालः,
11. छाता	छत्रम्,
12. टीचर पुरुष	शिक्षकः,
13. टीचर लेडी	शिक्षिका,
14. अलमारी	काष्ठमञ्जूषा,
15. आरामकुर्सी	सुखासन्दिका,
16. इंक पेंसिल, डॉट पेन	मसितूलिका,
17. शूज	उपानह्,
18. ड्रेस	परिधानम्,
19. ओढ़नी	प्रच्छदपटः,
20. ओवरकोट	बृहतिकाए
21. कंघी	प्रसाधनी,
22. कक्षा का साथी	सतीथ्यः, सहपाठी,
23. कमरा	कक्षः,
24. खिडकी	गवाक्षः,
25. पंखा	व्यजनम्,
26. एसी	वातायनम्,
27. डेस्टर	मार्जकः,
28. इन्स्पेक्टर	निरीक्षकः,
29. कम्प्यूटर	संगणकः,
30. कागज	कर्गदः, कागदः, कर्गलम्
31. रिफिल	मसियष्टिः,
32. कॉपी	सञ्चिका,
33. रजिस्टर	पञ्जिका,
34. कार्टून	उपहासचित्रम्
35. ड्रॉइंग	रेखाचित्रम्
36. कॉलेज	महाविद्यालयः,
37. स्कूल	विद्यालयः,
38. यूनीवर्सिटी	विश्वविद्यालयः,
39. किवाड़	कपाटम्
40. गेट	द्वारम्
41. मेन गेट	मुख्यद्वारम्,
42. दीवार	भित्तिका,
43. दीवारघड़ी	भित्तिघटिका,
44. घड़ी	घटिका,
45. दवात का ढक्कन	कुप्पी

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

मुझे धर्म वेद से हे पिता सदा इस तरह का प्यार दे

मुलतान की भूमि ने आर्यसमाज को बड़े-बड़े रत्न दिये हैं। श्री पण्डित गुरुदत्तजी विद्यार्थी, पण्डित लोकनाथ तर्कवाचस्पति, डॉक्टर बालकृष्णजी, स्वामी धर्मानन्द (पं. धर्मदेवजी विद्या मार्तण्ड), पण्डित त्रिलोकचन्द्रजी शास्त्री-ये सब मुलतानक्षेत्र के ही थे। आरम्भिक युग के आर्यनेताओं में महाशय जयचन्द्रजी भी बड़े नामी तथा पूज्य पुरुष थे। वे भी इसी धरती पर जन्मे थे। वे तार-विभाग में चालीस रुपये मासिक लेते थे। सम्भव है वेतन वृद्धि से अधिक मिलने लगा हो।

उन्हें दिन-रात आर्यसमाज का ही ध्यान रहता था। वे आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री चुने गये। सभा के साधन इतने ही थे कि श्री मास्टर आत्मारामजी अमृतसरी के घर पर एक चार आने की कापी में सभा का सारा कार्यालय होता था। एक बार मास्टरजी ने मित्रों को दिखाया कि सभा के पास केवल बारह आने हैं।

श्री जयचन्द्रजी ने चौधरी रामभजदत्त, मास्टर आत्मारामजी आदि के साथ मिलकर समाजों में प्रचार के लिए शिष्टमण्डल भेजे। सभा की वेद प्रचार निधि के लिए धन इकट्ठा किया। सभा को सुदृढ़ किया। जयचन्द्रजी सभा कार्यालय में पत्र लिखने में लगे रहते। रजिस्टरों का सारा कार्य स्वयं करते। इस कार्य में उनका कोई सहायक नहीं होता था।

पण्डित लेखरामजी के बलिदान के पश्चात् प्रचार की माँग और बढ़ी तो जयचन्द्रजी ने स्वयं स्वाध्याय तथा लेखनी का कार्य आरम्भ किया। वक्ता भी बन गये! आर्यसमाज की सेवा करनेवाले अथक धर्मवीर को निमोनिया हो गया। इस रोग में अचेत अवस्था में लोगों ने उन्हें ऐसे बोलते देखा जैसे वे आर्यसमाज मन्दिर में प्रार्थना करवा रहे हों अथवा उपदेश दे रहे हों। श्री पण्डित विष्णुदत्तजी ने उन्हें आर्यसमाज के 'शहीद' की संज्ञा दी। ***साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी***

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

पर्यावरण शुद्धि यज्ञ का आयोजन

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल 11 जून (रविवार) 207 प्रातः 9 से 1.30 बजे तक आर्य समाज नौरोजी नगर, नई दिल्ली में मण्डल के अन्तर्गत सभी आर्य समाजों का संयुक्त कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। ज्ञातव्य है कि सरकार द्वारा नौरोजी नगर क्षेत्र का पुर्ननिर्माण आरम्भ हो गया है। अतः इस आयोजन का उद्देश्य सामूहिक एकत्रीकरण द्वारा सल् 1966 में स्थापित नौरोजी नगर आर्य समाज मन्दिर की यथास्थिति रखना है। आप सभी से प्रार्थना है कि उद्देश्य की अनिवार्यता को ध्यान में रखकर आर्य समाज मंदिर रक्षार्थ अवश्य उपस्थित होवें। यज्ञ ब्रह्मा श्री महेन्द्र भाई होंगे। ध्वजारोहण पं. लखीराम शर्मा (प्रमुख समाज सेवी) करेंगे तथा मुख्य अतिथि श्रीमती मिनाक्षी लेखी (सांसद, नई दिल्ली) एवं डॉ. सत्यपाल सिंह (सांसद, बागपत) होंगे।

- स्वदेश कु. नागपाल, प्रधान

पृष्ठ 4 का शेष

पंजाबी बाग (प.) ने अपना पूरा सहयोग प्रदान किया। श्री विनय आर्य ने यज्ञ की हर क्रिया-प्रक्रिया की विस्तार से चर्चा की तथा उचित-अनुचित समझाते हुए, बिना किसी विरोधाभास के इस शिविर को सफल बनाते हुए यज्ञ पर वैज्ञानिक शोधों का विश्लेषण (यज्ञ में प्रयोग होने वाले तत्त्वों का उचित प्रयोग से महत्त्व व प्रयास) पर हर सम्मिलित सदस्य को जानकारी दी जिसका प्रदर्शन श्री वीरेन्द्र सरदाना कार्यकारी प्रधान पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, मंच पर बड़े सुन्दर ढंग से किया।

उन्होंने कहा कि ''जब इस तरह से यज्ञ का वैज्ञानिक महत्त्व आज की युवा पीढ़ी को ज्ञात होगा तथा समय के सदुपयोग से यज्ञ के इस रूप को देखेंगे तो उन्हें यज्ञ करने में कहीं कोई कठिनाई भी न होगी यही यज्ञ का सच्चा स्वरूप है।''

दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान रवि देव गुप्ता ने कहा ''यह मेरे लिए सपने जैसा दृश्य है जब आर्यजन अपने-अपने हवन कुण्ड पर बिना धुएं व अव्यवस्था द्वारा यज्ञ सम्पन्न कर रहे हैं।''

पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री रवि चड्डा ने कहा कि ''हर आर्य समाज में ऐसे प्रशिक्षण हों तथा सभी व्यक्ति इसी तरह के यज्ञ करेंगे तो वैदिक संस्कृति बहुत शीघ्र ही विश्व में अपना परचम लहराएगी।''

इस शिविर के महत्त्व को जानने, समझते व देखने हेतु आर्य जगत की विभिन्न गणमान्य महानुभाव अपनी शुभकामनाओं सहित पधारे जिनमें श्री प्रकाश आर्य, महामंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, डॉ. ममता सक्सेना (वैज्ञानिक एवं यज्ञ शोधकर्ता, दिल्ली), श्रीमती ज्योति गुलाटी (एम.डी.एच. ग्रुप), आचार्य अंशु देव, (प्रधान, छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री शत्रुधन लाल (रांची), डॉ. कमलनारायण (छत्तीसगढ़), सभा उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री सुबोध जिन्दल, एस.पी. सिंह, अजय तनेजा आदि प्रमुख थे।

शिविर को सफल बनाने में आर्यसमाज के प्रधान श्री अजित कुमार धवन, मन्त्री श्री अशोक मेहतानी, श्री सत्यानन्द आर्य, श्री जितेन्द्र बनाती, विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती नंदिता नागपाल, श्रीमती अंजली कोहली, आचार्य देव शर्मा, आचार्य आनन्द स्वरूप जी का विशेष योगदान रहा।

इस अवसर पर यज्ञ की सामग्री में प्रयोग होने वाली औषधियों व तत्त्वों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

इस शिविर की व्यवस्थाओं का पूर्ण करने मे श्री नीरज आर्य (सहसंयोजक), श्री योगेन्द्र आर्य, श्री विजेन्द्र आर्य, श्री अरविन्द नागपाल, श्री सुरेन्द्र चौधरी, श्री सन्दीप आर्य का विशेष योगदान रहा।

इस शिविर में भाग लेने वाले सभी आर्यजनों की जलपान व सुविधाओं की एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल की मैनेजमेंट व कार्यकर्त्ताओं का योगदान सराहनीय रहा, उनको साधुवाद। शिविर में पधारे सभी आर्यजनों का धन्यवाद किया गया।

- सतीश चड्डा, शिविर संयोजक

पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर प्राप्त प्रतिक्रियाएं

★ ऐसा कार्यक्रम प्रत्येक गांव तथा शहर में होना अनिवार्य है। यज्ञ के द्वारा प्रत्येक मनुष्य का उपकार करना अत्यावश्यक कार्य है। इसी प्रकार अन्य ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ इत्यादि का प्रचार हो। *- जय पाल सिंह आचार्य, घेवरा, दिल्ली*

★ यज्ञ प्रशिक्षण के अन्तर्गत कई ऐसी क्रियाएं बताई गईं जो हम पहले शायद गलत करते थे इस प्रशिक्षण के द्वारा हम सही क्रिया व मंत्र उच्चारण का लाभ उठा सके। *- बलवीर कौर ग्रोवर, 2604/1, शादीपुर, खामपुर, नई दिल्ली*

★ इतने सारे लोगों को एक साथ बैठकर यज्ञ करते देखना अपने आप में बहुत रोमांचकारी है क्योंकि इससे एक तो संगठन व एकता का पता चलता है साथ ही रुचि भी बढ़ती है क्योंकि जब काम साथ में होता है तो अनुभव भी शेयर होते हैं। *- अंजू आर्या, 934/61, त्रिनगर, दिल्ली*

★ यज्ञ प्रशिक्षण शिविर में शामिल होकर मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे अन्दर एक शक्ति का संचार हुआ है और दैनिक यज्ञ करने की प्रेरणा मिली है। हम कई वर्षो से आर्य समाज से जुड़े हैं लेकिन जो बातें या चीजें यहां सीखने को मिली शायद ही कहीं मिली हों। *- नीरा कपूर, 11/69 ए, तिलक नगर, नई दिल्ली*

सभा को प्राप्त शेष प्रतिक्रियाएं अगले अंक में प्रकाशित की जाएंगी। - सम्पादक

गुमशुदा आर्य संन्यासी की तलाश

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास जिला बुलन्द शहर उ.प्र. के कर्मठ कार्यकर्त्ता, संरक्षक जिन्होंने अपना पूरा जीवन आर्य समाज को दिया श्री रणजीत उर्फ ब्र. रणजीत दीक्षित (पिता श्री ओमकार सिंह, माता श्रीमती कलावती देवी के सुपुत्र और श्री भोला सिंह, श्री नौवत सिंह, श्री जयपाल सिंह के भाई।) माता-पिता ने शादी के लिए दबाव बनाया लेकिन उन्होंने कहा 'शादी की तो मैं एक परिवार की सेवा कर सकूंगा लेकिन ब्रह्मचारी बनकर मैं समाज की सेवा करूंगा।' सन् 2010 में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती द्वारा सन्यास लिया और स्वामी दीक्षानन्द बने, उन्होंने आयुर्वेदिक औषधालय चलाया ग्रामीणों के सुधार हेतु आर्य वीरदल शिविरों का आयोजन कराते रहे। 16 जुलाई सन् 2016 को दिल्ली आर्य समाज दुर्गा पार्क के लिए जब आए तब से अब तक वह लापता हैं। यदि किसी सज्जन को इनके बारे में कोई भी जानकारी हो तो कृपया सूचित करें।

- आर्य मुनि (बीघम्बर), प्रधान आर्यसमाज कर्णवास, मो. 9758612792

पृष्ठ 5 का शेष

बच्चों की मदद को कपड़ें, जूते-चप्पल, किताबें आदि प्रदान करने लिए 'सहयोग' योजना का भी शुभारम्भ किया गया।

कार्यक्रम में मौजूद राष्ट्रीय जनजाति आयोग की उपाध्यक्ष अनुसुइया यूइके ने अपने उद्बोधन में पूरे सदन को संबोधित करते हुए कहा कि 'बिना आडम्बर और नि:स्वार्थ भाव से आर्य समाज आज देश को नई दिशा देने का कार्य कर रहा है। अपनी संस्कृति के साथ राष्ट्रीय भावना वैचारिक परम्परा आदिवासी समुदाय तक पहुंचा रहा है। आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्ताओं को मेरा प्रणाम। उन्होंने संस्था द्वारा पूर्वोत्तर भारत समेत अन्य आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा समेत स्वरोजगार के प्रशिक्षण केंद्र खोले जाने की सराहना करने के साथ संस्था को सामाजिक एवं वैचारिक राष्ट्र सेवा करने के लिए धन्यवाद दिया। उनके उद्बोधन के साथ ही मावलंकर हाल करतल ध्वनि से गूजं उठा।

कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए विश्व हिन्दू परिषद की ओर से विनोद बंसल ने आर्य समाज पर गर्व करते हुए कहा कि 'आर्य समाज श्रीरामचंद्र जी महाराज की तरह वनांचलो में सेवा कार्य करने के साथ वनवासी समाज के अन्दर संस्कार और गौरव जगाने का कार्य रहा है।' वनवासी कल्याण परिषद के संगठन मंत्री सुरेश कुलकर्णी ने कहा कि 'आर्य समाज की सेवा इकाई दयानन्द सेवाश्रम संघ देश के विभिन्न हिस्सों में जाकर बच्चों के अन्दर राष्ट्रीयता का भाव जगाकर देश को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य कर रही है।' उन्होंने आर्य समाज के कार्यो की प्रसंशा करते हुए कहा कि 'वनवासियों के हित की रक्षा के लिए आर्य समाज का लक्ष्य, संकल्प और विषय सम्मान का पात्र है।'

कार्यक्रम में मौजूद दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने कहा कि 'माता प्रेमलता के लगाये इस पौधे को महाशय जी ने अपने तन-मन-धन सींचा जिस कारण इस पौधे में आज कितने पत्ते उग आये इसकी गिनती नहीं की जा सकती।' उन्होंने आगे कहा कि 'आर्य समाज मानता है आदिवासी कमजोर नहीं ताकतवर हैं। बस इस स्वाभिमानी समाज को आधुनिक शिक्षा और मुख्यधारा से जोड़ने की जरूरत है। इस कड़ी में हमने पिछले कुछ समय में तेजी लाते हुए महाशय धर्मपाल जी व अन्य आर्य महानुभावों के सहयोग से पूर्वोत्तर भारत से लेकर मध्य और दक्षिण भारत में स्कूल और बालवाड़ी का कार्य प्रारम्भ किया। इस शिविर के माध्यम से प्रशिक्षण लेकर आदिवासी क्षेत्रों के लोग अपने गांव के लोगों को बालवाड़ियों के माध्यम से शिक्षित करते हैं।'

दिल्ली सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'भारतीय समाज की विभिन्नता में एकता का सबसे सुन्दर उदाहरण इस शिविर में देखने को मिलता है। सामाजिक, आध्यात्मिक उन्नति से हजारों लोगों को संस्कारित कर आर्यसमाज अपने कर्त्तव्यों का पालन कर रहा है। उन्होंने उपस्थित लोगों प्रार्थना कर कहा कि मात्र कह देने से समस्या का समाधान नहीं होता। एक बार वहां जाकर देखिये महसूस कीजिये, आज के इस आधुनिक दौर में भी आदिवासी समुदाय कितने कम संसाधनों में जीवन यापन कर रहा है।'

इस अवसर पर 15 दिन तक शिविर में उपस्थित रहे छात्र-छात्राओं ने भी अपने विचार रखे शिवहर से दिल्ली आये छात्र बीरबल आर्य ने कहा 'इस शिविर के माध्यम से जीवन में जो सीखा, हमेशा उसका पालन करूंगा। आर्य समाज में आने के बाद चार वेद और सत्यार्थ प्रकाश के बारे में जाना। यदि कोई ऐसे शिविर में नहीं आता तो इस ज्ञान से अधूरा रह जाता है, इसी दौरान गुरुकुल की मुस्लिम छात्रा नुसरत प्रवीन ने यह कहते हुए सबका मन मोह लिया की संसार में कोई भाषा रहे न रहे पर संस्कृत हमेशा थी, हमेशा रहेगी।

समारोह के अंत में आचार्य वागीश ने अपने प्रखर वैदिक राष्ट्रवादी विचारों से समारोह को उसकी श्रेष्ठ ऊंचाई पर पहुंचा दिया। उन्होंने कहा दु:ख का कारण ज्ञान का मिटना है जिस विराट हिन्दू जाति के पास राम और कृष्ण जैसे महापुरुष थे वह जाति हजारों साल गुलाम क्यों रही? कारण हमने इन महापुरुषों को मूर्तियों के कैद कर इनके विचारों को भुला दिया। जिस कारण लोग वर्षो तक गजनी और अरब के बाजारों में गुलामों के रूप में बेचे गये। हमने आजादी के बाद भी सही ढंग से होश नहीं सम्हाला और वनवासियों, आदिवासियों को शूद्र, अछूत समझकर उनका निरादर किया जिसका लाभ मत-मतान्तरों ने उठाया। जबकि आदिवासी समाज हमारा रक्षक ही नहीं बल्कि वनों में उपलब्ध सामान हम तक पहुंचाने वाले लोग हैं। उन्होंने वैदिक व्यवस्था का हवाला देते हुए कहा कि वैदिक काल की तरह सबको समान अवसर मिले तभी देश का परम वैभव और अच्छे दिन आयेंगे वरना वह भी आदिवासी है और हम भी आदिवासी हैं।

कार्यक्रम में एनसीएसटी की उपाध्यक्ष अनुसुइया यूइके, वनवासी कल्याण संगठन मंत्री सुरेश कुलकर्णी समेत संस्था के प्रधान महाशय धर्मपाल एम.डी.एच ग्रुप), कैप्टन रूद्रसेन हरिभूमि समाचार पत्र), विनोद खन्ना, विश्व हिन्दू परिषद की ओर से विनोद बंसल, आचार्य वागीश, मध्य प्रदेश से आचार्य दयासागर, राजस्थान से आचार्य जीववर्धन जी समेत अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे। देश के कोने-कोने से आए छात्र-छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। इस अवसर पर परीक्षा में अच्छे अंक लाने वाले छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। श्री नीरज आर्य एवं श्री सुरेन्द्र चौधरी जी सहित संस्था की ओर सबका धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया

- जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 29 मई, 2017 से रविवार 4 जून, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 1/2 जून, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 31 मई, 2017

दिल्ली सभा के अन्तर्गत क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दोपहर 3 से सायं 7:15 बजे तक दिल्ली की आर्यसमाजों की क्षेत्रवार गोष्ठियों का आयोजन किया गया है। आपसे निवेदन है कि आप अपनी आर्यसमाज के सभी महत्त्वपूर्ण अधिकारियों तथा सक्रिय महिला पदाधिकारियों को भी साथ लाएं ताकि चर्चाएं तथा सूचनाएं समस्त आर्यजनता तक सरलता से पहुँचाई जा सके और गोष्ठी के उद्देश्यों को पूर्ण किया जा सके। आपसे यह भी निवेदन है कि यदि आप किसी कारणवश अपने क्षेत्र की गोष्ठी में न पहुंच पाएं, तो अन्य क्षेत्र की गोष्ठी में अवश्य ही पहुंचने का प्रयास करें। तिथियों में परिवर्तन सम्भव है। शेष स्थान बाद में सूचित किए जाएंगे। गोष्ठी के उपरान्त समस्त उपस्थित महानुभावों के लिए सुन्दर प्रीतिभोज की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी।

पश्चिम दिल्ली-1 आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी रविवार : 25 जून, 2017	**पश्चिम दिल्ली-2** आर्यसमाज कीर्ति नगर रविवार : 2 जुलाई, 2017
उत्तरी दिल्ली आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स रविवार : 9 जुलाई, 2017	**पूर्वी दिल्ली** आर्यसमाज सूरजमल विहार रविवार : 16 जुलाई, 2017
दक्षिण दिल्ली आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट-2 रविवार : 23 जुलाई, 2017	

प्रतिष्ठा में,

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के आह्वान पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर

पर्यावरण शुद्धि यज्ञ

3-4-5 जून, 2017

आओ हाथ बढ़ाएं धरती को स्वच्छ बनाएं

आप भी अपने क्षेत्र के अधिकाधिक सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञों का आयोजन करें

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001,

मो. 9540040339

शुभ सूचना

आर्य सन्देश अपने पाठकों के लिए राष्ट्रीय समाचारों के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय समाचारों का प्रकाशन ''सार्वदेशिक समाचार कॉलम'' के अन्तर्गत 4 अतिरिक्त पृष्ठों के साथ शीघ्र ही शुरू करने जा रहा है। आप से अनुरोध है कि आप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रही आर्य समाजों/ संस्थाओं के समाचार सम्पर्क सूत्र/ईमेल/ मोबाईल नं. के साथ प्रेषित करें जिससे उन्हें आर्यसन्देश में स्थान दिया जा सके। **-सम्पादक**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह